सम्पादकीय

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन एवं राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ शाहपुराबाग, जयपुर द्वारा श्री श्री 1008 भुवनेश्वरानंद जी महाराज, महंत श्री राम प्रसाद जी महाराज एवं महंत श्री हरिशंकर दास जी वेदांती के शुभाशीर्वाद के परिणामस्वरूप **'शिक्षा कौस्तुभ'** त्रैमासिक शोधपत्रिका के प्रथम वर्ष का प्रथम अंक प्रकाशित किया जा रहा है। 'संस्कृत सुमेरु' विद्वत् - शिरोमणि स्व. पं. मोतीलाल जी जोशी के संकल्प की परिणति के रूप में उनकी शाश्वती प्रेरणा का यह उत्कृष्ट आयाम विज्ञ परामर्शदाताओं के सत्परामर्श से निर्मित किया जा कर संपादक मण्डल द्वारा सम्पादित किया जा रहा है।

त्रैमासिक शोध पत्रिका के इस अंक में शिक्षा, संस्कृति एवं ज्ञान-विज्ञान के विषयों पर उत्कृष्ट विद्वानों के लेख-शोधलेख संकलित है। सर्वप्रथम राष्ट्रपतिसम्मानित देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित 'राष्ट्रीय एकता का मूलाधार . संस्कृत भाषा' लेख में संस्कृत के गौरवपूर्ण ऐतिह्य की प्रस्तुति हुई है। यह लेख संस्कृत भाषा की वर्णमाला, शब्दावली, वाङ्मय एवं उनके प्रभावों का विश्लेषण भारतीय शैक्षिक गुरुत्व को उपस्थापित करता है। तत्पश्चात् राष्ट्रपति सम्मापित प्रो. वैद्य बनवारीलाल गौड द्वारा लिखित 'योगः कर्मसु कौशलम्' योगविषयक लेख योग की दार्शनिक अवधारणा को आयुर्वेदीय संदर्भ में प्रस्तुत करता है। वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती माधुरी शास्त्री द्वारा लिखित 'राजस्थान में रामभक्त हनुमान के प्रसिद्ध मन्दिर' लेख ऐतिहासिक होने के साथ-साथ सांस्कृतिक दृष्टि से अद्भुत प्रेरणास्पद है।

डॉ. सरोज कोचर द्वारा लिखित 'अनुपम गुणों के धारक : आचार्य श्री' लेख में जैन मुनि श्री इन्द्रविजय जी के व्यक्तित्व के साथ-साथ उनके द्वारा किये गये जैन धर्म के प्रचार प्रसार एवं भारतीय संस्कृति के संरक्षण विषयक संदर्भों का रोचक प्रस्तुतीकरण हुआ है। तत्पश्चात् प्रो. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा द्वारा लिखित 'पूर्णावतार श्री कृष्ण तथा षोडश कला का रहस्य' शोधलेख में अवतारवाद की पृष्ठभूमि में श्री कृष्ण के पूर्णत्व की व्याख्या की गयी है। श्री गोपीनाथ पारीक गोपेश द्वारा लिखित 'वेदों में आयुर्वेद' शीर्ष लेख में आयुर्वेद के शास्त्रीय आधारों का प्रस्तुतीकरण हुआ है। डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'अस्माकं ब्रह्माण्डम्' शोध लेख ब्रह्माण्ड के विषय को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करता है। डॉ. शिवचरण शर्मा साहित्याचार्य द्वारा लिखित 'गुरु-महिमा' लेख शिक्षक के प्राचीन गौरव का उपस्थापन करता है। श्रीमती अंजना शर्मा द्वारा लिखित 'सनातन धर्म का विज्ञान' लेख में अनेक धार्मिक विषयों को वैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। डॉ. मनीषा शर्मा द्वारा लिखित 'Psychological Benefits of Exercise शोध लेख में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से तनावहीनता के उपायों को दर्शाते हुये आनन्द से जीवन जीने के सूत्र प्रस्तुत किये गये हैं, जो अत्यंत उपयोगी है।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने हेतु उत्साहशील होंगे।

शुभकामनाओं सहित....

प्रधान संपादक - डॉ. मनीषा शर्मा